पाठ-23

नन्हा सत्याग्रही

आइए सीखें : ● स्वाभिमान को जीवन में आत्मसात करना ● ''अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है'' उक्त पंक्ति का जीवन में महत्व ● प्रत्यय एवं क्रिया के रूपों की पहचान।

*(**पाठ परिचय**- प्रस्तुत कहानी में एक बालक गांधी जी के बताये मार्ग पर चलते हुए पुलिस अधिकारी के एक गलत व्यवहार का शिकार होता है। वह अपनी माँ, अपने पड़ोसियों के अनेक बार समझाने पर, पुलिस अधिकारी के रौब दिखाने पर भी अपने निश्चय पर अटल रहता है। अंत में पुलिस अधिकारी को अपनी गलती स्वीकार करनी पड़ती है। बालक बस चाहता भी यही था।)*

बात जरा-सी थी पर मोहन था कि रोये चला जा रहा था। समझा-समझाकर थक गए कि बड़े छोटों को पीटते चले आए हैं, अगर 'पुलिस चाचा' ने उसके एक चपत लगा भी दी तो क्या हो गया? कौन-सा पहाड़ टूट पड़ा उस पर? बड़े हैं, पड़ौसी हैं, प्यार भी करते हैं, अच्छे-बुरे में काम भी आते हैं। पर वह अब रोते-रोते मुँह बिसूरने लगा था, उसकी हिचकियाँ बँध गई।

''अरे भाई, बड़े हैं, जरा जल्दी होगी, किसी ने उन्हें नहीं टोका। एक तुम्हीं उनके आड़े आ गए।''

''क्योंकि उनकी गलती थी। बड़ों ने नहीं टोका उन्हें और मैंने टोक दिया, तो मुझे पीट दिया, क्यों? कोई बड़ा उन्हें रोकता-टोकता तो क्या वह उसे चाँटा जड़ देते? नहीं तो, मुझे इसलिए पीट दिया कि मैं बच्चा हूँ, छोटा और कमजोर हूँ... ।''

लोग भी तरह-तरह की बातें कर रहे थे-

''लड़का जिरह किये जाता है, इसे कौन समझाए?''

''रोता हैं, रोने दो - कब तक रोएगा?''

''अभी थककर आप चुप हो जाएगा।''

''चलो जी, चलो.... सब-इंस्पेक्टर साहब आप भी चलें..... सुबह-ही-सुबह रोनी सूरत

शिक्षण संकेत : ■ कहानी के प्रेरक प्रसंग पर चर्चा करते हुए गांधी के सत्य बोलने एवं दृढ़ निश्चयी होने के उदाहरणों पर चर्चा करें ■ संकल्प एवं दृढ़ इच्छा शक्ति से बने महान महापुरुषों के बारे में बताएँ।

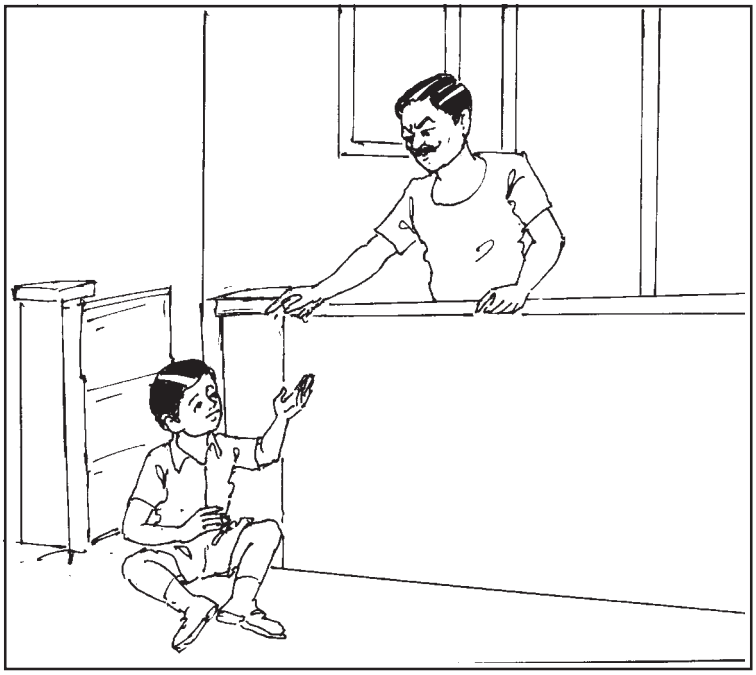

सामने पड़ी। छुट्टी का दिन न बिगड़ जाए।'' इतना कह-सुनकर दूध की दुकान के आगे खड़े लोग बिखर गए। दूध खत्म होने पर दूधवाला भी बूथ बन्द कर चला गया। पर वह वहीं खड़ा रोता रहा-रोता रहा; टस-से-मस न हुआ। सूरज की किरणें चमकने पर भी जब वह घर न पहुँचा तो उसकी माँ ने इधर-उधर पूछा। पड़ोस के गुल्लू ने सारी बात बतलाई। सुनकर माँ उस बूथ के पास गई, तो वह उनसे लिपट गया। हिचकियाँ भरकर रोने लगा। माँ ने भी वही कहा जो सबने कहा था। ''अरे बेटा! बड़े हैं, बाप बराबर, तनिक चपतिया दिया तो क्या हो गया? कौन तीर तान दिया? चुप भी हो जा अब।''

''मार दिया तो कुछ नहीं, बड़े हैं, और मार दें, पर मेरा कसूर तो बताएँ। बप्पा को कारखाने में यूनियन वालों ने मारा; वे अस्पताल में पड़े हैं। उनका कोई कसूर होगा, पर मुझे क्यों मारा। मेरी क्या गलती थी? क्या कसूर था?''

''अब जिद मत कर, तूने दूध भी नहीं लिया..... तेरे बप्पा को अस्पताल नाश्ता देने जाना है, तुझे याद नहीं?''

''मैं नहीं जाऊँगा। कहीं नहीं जाऊँगा। जाऊँगा तो पुलिस चाचा के घर।''

''मान भी जा बेटे, मैं उनसे कह दूँगी कि आगे से ऐसा सुलूक न करें बच्चों के साथ।''

''पर जो दो चाँटे मुझे जड़ दिए, उनका क्या?''

''उनका क्या? अब चुप भी हो ले, नहीं तो मैं भी लगा दूँगी, चल''

''तो तुम भी क्यों चूको, लगा दो''

''मैं कहती हूँ, घर चल। अस्पताल जाना है, अब उठ भी।''

''मैं नहीं आता, पुलिस चाचा के घर जाकर पूछूँगा उनसे कि मेरा कसूर बताओ।''

''नहीं आता तो बैठ यहीं।'' इतना कह माँ सिर पर पल्ला ढँककर वहाँ से चल दी।

ट्रिन.... ट्रिन .... ट्रिन घंटी सरसराई। थोड़ी देर बाद दरवाजा खोला तो पाया- भीगी आँखें लिए, सामने मोहन खड़ा है। उसे देखकर शेरसिंह सकपकाए।

''चाचा आपने मुझे क्यों मारा? मेरा कसूर क्या था?'' सुबकते हुए उसने वही सवाल पूछा।

''किसने मारा? किसको? मैं कुछ नहीं जानता।''

''आपने मारा मुझे। आखिर क्यों मारा?''

''जा, मारा तो मारा। दफा हो जा यहाँ से, नहीं तो और पिट जाएगा। चल खिसक।'' वह गरजे।

''मारो.... और मारो, पर मैं नहीं जाऊँगा, जब तक आप यह नहीं बताएँगे कि मेरा कसूर क्या था....'' वह भी कड़ककर बोला। अब आसपास के घरों की मुँडेरों से दस-पाँच चेहरे उभर आए। देखा, बरामदे के सामने मुँह बिसूरता मोहन खड़ा है और अपने बरामदे में झल्लाए शेरसिंह।

''जाएगा भी यहाँ से, या दो-एक चपत खाकर ही टलेगा।''

''आप जो चाहें करें। जब तक मेरा कसूर नहीं बताएँगे, मैं यहाँ से नहीं जाऊँगा।''

''अजीब उजड्ड-ढीठ लड़का है।'' एक पड़ोसी ने कहा।

''देखिए, आप इसे समझाएँ; अगर यहाँ से दफा नहीं हुआ तो मैं इसे कोतवाली में बन्द करवा दूँगा,'' शेरसिंह गरजे।

''आप जो चाहें सो करें, पर मेरा कसूर बताएँ, जिससे मैं आगे ऐसा कुछ न करूँ कि बड़ों को मुझ पर हाथ उठाना पड़े?'' मोहन बोला।

''अभी तो बस तू इतना कर कि यहाँ से दफा हो जा। नहीं तो.....'' वह भन्नाए। ''सच, पड़ोस का लिहाज है, वरना इस बच्चू को वह सबक सिखाता कि....'' शेरसिंह कुढ़कर बोले। परसों ही वे नायक से तरक्की लेकर असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर बने थे।

''मैं सबक सीखने ही आया हूँ। आप मुझे बताएँ कि कतार तोड़ने वाले को टोकना कोई पाप है?''

''यार, इस लड़के पर कौन-सा भूत सवार है? किसी भी तरह नहीं मानता।'' इतना कहकर शर्मा जी नीचे उतरे! वर्मा जी भी साथ आए और उसे पुचकारकर दिलासा देते बोले, बहुत हो गया, बेटे मोहन। अब छोड़ो भी और घर चले जाओ।

''आप सच मानें, मेरी हेठी नहीं हुई, अगर चाचा ने पीट दिया.... और लगा दें दो-चार पर बताएँ तो कि आखिर क्यों मारा मुझे?.....''

''कुत्ते की दुम, टेढ़ी की टेढ़ी। कहा न भाई बड़े हैं।''

''बड़े तो आप सब हैं। सभी पीट दें, मैं कुछ नहीं बोलूँगा। लेकिन इतना बताए कि क्यों, सिर्फ इसलिए कि मैं छोटा हूँ, कमजोर हूँ।''

''नहीं-नहीं यह बात नहीं। तुमसे कोई बदतमीजी हुई होगी। इसलिए, बस।''

''तो यह बता दें कि क्या बदतमीजी हुई?''

''जा, जा कुछ नहीं हुआ। पीट दिया हमने, कर ले जो कुछ करना हो;'' अब शेरसिंह के भीतर बैठा पुलिसवाला बोला।

''ठीक है, तो मैं यहीं बैठा हूँ। आपके फाटक के बाहर।''

''बैठ या मर, हमारी बला से,'' शेरसिंह ने कहा। तभी उनकी घरवाली बाहर आई और उसके सामने खड़े लोगों के हाथ जोड़कर वहाँ से जाने को कहा और मोहन की बाँह थाम भीतर ले गई।

''अब बोल बेटा! क्या गजब हो गया? अगर इन्होंने एक-आध लगा भी दी, तो क्या हुआ जैसे-हमारी अमृत, वैसा तू। चल मुँह धो, कुल्ला कर और नाश्ता कर ले, उठ!''

''चाची! आपकी बात सर आँखों पर ..... पर चाचा बताएँ तो?''

''अब क्या बताएँ ..... समझ ले कि गुस्सा आ गया।''

''तो बस, बाहर पाँच पड़ोसियों के सामने यही कह दें।''

''भई, तू तो बहुत जिद्दी है, इससे क्या हो जाएगा?''

''मुझे तसल्ली हो जाएगी कि मैने ठीक काम किया था।''

''मैं कहती हूँ कि तुमने गलती नहीं की, ठीक किया।''

''आपने कहा, माना ..... पर पीटा तो चाचा ने, सबके सामने।''

''अजी सुनते हो, सुबह-सबेरे क्या महाभारत रचा बैठे। कह दो कि ठीक था मोहन, बस गुस्से में पीट दिया।''

''बस, बस रहने दो अपनी भलमनसाहत। यह नाचीज मुझे अपने घर में, अपने बच्चों के सामने, अपमानित करना चाहता है,'' शेरसिंह गुर्राए।

''इसमें क्या हुआ जो हेठी होती है आपकी?''

''तुम रुको, मैं इसे अभी धक्के मारकर बाहर कर देता हूँ।'' इतना कहकर शेरसिंह आगे बढ़े।

''आप क्यों हलकान होते हैं साहब, मैं खुद ही चला जाता हूँ आपके घर से।'' मोहन ने इतना कहा और हाथ जोड़कर बाहर आ गया, पर गया नहीं। फाटक पर ही घुटनों में सिर रखकर बैठ गया।

उधर वह पुलिस की नई वर्दी पहनकर तैयार होने लगे।

''सुनिए, वह लड़का अभी तक फाटक पर डटा है, कह दो कि गुस्सा आ गया था। क्यों जगत में डंका पिटवाते हो कि बित्ते-भर का छोकरा थानेदार के दर्जे के सरकारी अफसर के दरवाजे पर सत्याग्रह किए बैठा है। कहीं अखबारवालों को भनक पड़ गयी तो तिल का ताड़ बनेगा। फिर आज गांधी जयन्ती भी है।''

''क्या कहती हो, उसके आगे गिड़गिड़ाऊँ, कहूँ कि मेरे बाप बख्शो.... ?'' (तभी सबको सन्मति दे भगवान, ईश्वर-अल्लाह तेरे नाम की गूँज सुनायी दी।) खिड़की से झाँका तो देखा -लड़के झंडे और तख्तियाँ उठाए प्रभात-फेरी पर निकले हैं। असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर भीतर खड़े थे और मोहन बाहर उनके फाटक पर डटा था, तभी लड़कों की टोली आ पहुँची। वहाँ अपने साथी को गठरी बना बैठे देखा, तो सब वहीं रुक गए।

''क्या हुआ?''

''मोहन यहाँ क्यों बैठा है?''

''चलो, इसे भी साथ लो, इसे भी तो एक तख्ती बनानी थी।''

''चलो मोहन, प्रभात फेरी में। यहाँ बैठे क्या कर रहे हो?'' आगे वाले बड़े लड़के ने

उसकी बाँह थामकर उठाया तो देखा, उसकी आँखे सूजकर लाल हो गयी हैं और अभी भी उसकी आँखों से आँसू बह रहे हैं।

''अरे क्या हुआ इसे?'' सभी के मुँह से निकला।

तभी एक लड़के ने जो सुबह दूध लेने आया था, सारी बात बताई और कहा कि मोहन सुबह से इस बात पर अड़ा है कि इंस्पेक्टर साहब बताएँ, उसने ऐसा क्या कसूर किया था, जो उन्होने उसे पीट दिया। सब समझाकर हार गए, पर यह यहाँ से टलता ही नहीं।

''मोहन तुम्हारी तख्ती का पन्ना कहाँ है कल तो हेकड़ी बघार रहे थे कि गांधी जी की वह बात चुनूँगा कि....।''

''वह तो यह रहा, लो पढ़ो,'' कहकर मोहन ने एक कागज आगे बढ़ा दिया। उस पर लिखा था - ''अत्याचार को सहना उसे बढ़ावा देना है।''

''ठीक है, गांधी जयंती पर गांधी जी एक बात को सही करके दिखाएँ।'' इतना बोल एक बड़े लड़के ने तिरंगा ऊँचा करते हुए जोर से कहा - ''दोस्तो, इंस्पेक्टर साहब को सफाई तो देनी ही होगी। हम सब यहीं रुकें। बोलो - महात्मा गांधी की जय।..... इंस्पेक्टर साहब, बाहर आओ....।'' आस-पास ऐसे ही नारे गूँजने लगे।

अब तो मोहल्ले भर के लोग भी वहाँ जमा हो गए। नारे गूँजते रहे। मोहन हाथ जोड़कर फाटक के आगे खड़ा रहा। थोड़ी देर बाद बाबा फरीद फाटक खोलकर भीतर गये और शेरसिंह जी के साथ बाहर आए। फिर सबको स्नेह से देखते हुए बोले, ''प्यारे बच्चों! सुनो, चाचा तुमसे कुछ कहना चाहते हैं।'' इतना कहकर वे पीछे हट गए।

अब सामने शेरसिंह आए और कहने लगे, ''अच्छा बच्चो! आज सुबह मुझसे एक ज्यादती हो गई। मैं अत्याचार कर बैठा। गुस्से में मैने मोहन पर हाथ उठा दिया। कसूर मेरा ही था। मैं शर्मिन्दा हूँ।'' इतना सुनना था कि मोहन ने आगे बढ़कर शेरसिंह के चरण छुए और जोर से नारा लगाया, ''इंस्पेक्टर साहब जिन्दाबाद!''

- आलमशाह खान

लेखक परिचय : आलमशाह खान - आलम खान का जन्म 31 मार्च 1936 का उदयपुर (राजस्थान) में हुआ था। आप मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर में हिन्दी विषय के सहायक प्राध्यापक रहे तथा राजस्थान मानवाधिकार आयोग के सदस्य रहे हैं। आपके प्रकाशित कहानी संग्रह है - 'मीरा लोकतात्विक अध्ययन' (आलोचना), राजस्थान के कहानीकार 'एक गधे की जन्म कुण्डली', 'एक और सीता', 'परायी प्यास का सफर' आदि।

अभ्यास

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से खोजकर लिखिए-

सलूक ---------- बदतमीजी ----------

दफा हो जाना ---------- सकपकाए ----------

नाचीज ---------- हलाकान ----------

प्रश्न 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में लिखिए-

क. वह 'बात जरा-सी थी' वह जरा-सी बात क्या थी जिसके कारण मोहन रोये जा रहा था?

ख. ''जा, जा कुछ नही हुआ। पीट दिया हमने। कर ले जो कुछ करना है। अब शेरसिंह के भीतर बैठा पुलिसवाला बोला।'' इस कथन में पुलिस वाले का क्या भाव है? सही उत्तर चुनकर लिखिए।

(क) घमण्ड (ख) घृणा

(ग) क्रोध (घ) लापरवाही

ग. मोहन के मित्रों ने उसका साथ कैसे दिया?

प्रश्न 3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए -

क इस पाठ में कुछ वाक्य ऐसे हैं जिनमें बालकों की बात पर ध्यान न देने का भाव दिया है। ऐसे चार वाक्य पाठ में से छाँटकर लिखिए ?

ख 'लड़का जिरह किए जाता है, इसे कौन समझाए?' लोग किस आधार पर ऐसा कह रहे थे?

ग आस-पास की मुँडेरों से उभर आये चार-पाँच चेहरों ने जो देखा, उससे संबंधित पंक्तियाँ लिखिए ।

घ फरीद बाबा ने शेरसिंह को क्या-क्या कहा होगा ? जिसे सुनकर वे माफी माँगने आ गए।

भाषा-अध्ययन

प्रश्न 1. 'चपत' से बना है 'चपतिया'। ऐसे ही 'इया' प्रत्यय लगाकर पाँच शब्द बनाइए।

प्रश्न 2. बदतमीज से भाववाचक संज्ञा बदतमीजी बनी है। नीचे लिखे शब्दों से भाव वाचक संज्ञाएँ बनाइए-

ईमानदार ----------खराब ----------

बेईमान ---------- सफेद ----------

कमजोर ---------- चालाक ----------

प्रश्न 3. नीचे लिखे शब्द दो-दो शब्दों से बने हैं। इन सभी का दूसरा शब्द 'आत्मा' है। प्रथम शब्द क्या है ? लिखिए-

महात्मा, धर्मात्मा, पुण्यात्मा, परमात्मा, पापात्मा।

प्रश्न 4. नीचे लिखे वाक्यों में कोष्ठक में अंकित मूल क्रिया का सही रूप बनाकर रिक्त स्थान भरिए।

1. स्कूल की घंटी ..... । मंदिर में घंटा .....। (बजाना)
2. हम गांधी जयंती ..... । बच्चे बाल दिवस .....। (मनाना)
3. प्रधानजी ने झंडा.....। अध्यापक ने झंडियाँ.....। (फहराया)
4. घर में भाई .....। घर में बहन ..... । (आना)

प्रश्न 5. कुछ शब्दों में से '' ं '' या '' ँ '' हट गये हैं। जहाँ जो जरूरी हो, वहाँ वही चिह्न लगाकर ठीक/सही कर दें-

पाच ..... आख .....

डका ..... तख्तिया .....

मुह ..... गाधी .....

हसना ..... मच .....

प्रश्न 6. 'बड़ा' या 'बड़े' शब्द का प्रयोग कई अर्थों में होता है। भिन्न-भिन्न अर्थों में इसका प्रयोग कीजिये और अर्थ भी लिखिए।

प्रश्न 7. इन मुहावरों के अर्थ लिखिए और वाक्यों में प्रयोग कीजिए-

टस-से-मस न होना, पहाड़ टूट पड़ना।

प्रश्न 8. 'खाना' सहायक क्रिया का विभिन्न अर्थों में प्रयोग करते हुए चार वाक्य लिखिए।

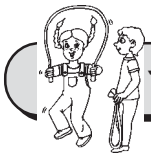

योग्यता विस्तार

1 दूध की दुकान पर क्या-क्या हुआ होगा? आधे पृष्ठ में लिखिए ।

2. यदि आप मोहन के स्थान पर होते तो किस प्रकार प्रतिकार करते ?